Shah Times
20-9-2022

तटीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण और प्रबंधन पर ट्रेनिंग कोर्स का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग, एफआरआई की ओर से भारतीय तटरक्षक बल के अधिकारियों के लिए 'तटीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण और प्रबंधन' पर एक सप्ताह के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया है।

इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य तटीय जैव विविधता और इसके प्रबंधन से संबंधित मुद्दों की समझ विकसित करना है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में गोवा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार, केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी और नई दिल्ली के 12 अधिकारी भाग ले रहे हैं। निदेशक, एफआरआई, डॉ रेणु सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में तटीय पारिस्थितिकी तंत्र और इसके प्रबंधन के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. सिंह ने उल्लेख किया कि कई आर्थिक और औद्योगिक गतिविधियों के कारण दुनिया भर के तटीय क्षेत्र जबरदस्त दबाव में हैं। ये दबाव तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिक स्थिरता के लिए खतरा हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि, समुद्र के स्तर में वृद्धि, समुद्र की सतह के तापमान में वृद्धि और समुद्र के अम्लीकरण जैसी घटनाएं तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र को भी प्रभावित कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से समुद्र के स्तर में वृद्धि तटीय जैव विविधता, समुदायों और कृषि उत्पादन पर महत्वपूर्ण होने का अनुमान है। इसलिए इसका संरक्षण और प्रबंधन समय की मांग है। अंत में सफल आयोजन की कामना की। प्रशिक्षण की शुरुआत डॉ. वी.पी. पंवार, प्रमुख, वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग के स्वागत भाषण से हुई। पाठ्यक्रम के उद्घाटन सत्र में सभी प्रभागाध्यक्ष, आईएफएस अधिकारी, वैज्ञानिक, डीन एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी, रजिस्ट्रार एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी, रजिस्ट्रार एफआरआई, संस्थान के तकनीकी कर्मचारी शामिल हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. अभिषेक के वर्मा द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सत्र का समापन हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम एक सप्ताह तक चलेगा जिसमें प्रख्यात संसाधन व्यक्ति तटीय जैव विविधता और प्रबंधन पर अपने अनुभव और ज्ञान साझा करेंगे। अधिकारियों को जैव विविधता के संरक्षण और प्रबंधन से अवगत कराने के लिए मसूरी में मसूरी वन्यजीव अभयारण्य और हरिद्वार में झिलमिल झील में दो फील्ड टूर की व्यवस्था की जाएगी।

भारतीय वन अनुसंधान की ओर से तट रक्षक बल के अफसरों के लिए किया जा रहा एक सप्ताह का आयोजन

Amar Ujala

20-9-2022

कवायद

वन अनुसंधान संस्थान में अफसर सीख रहे हैं गुर

समुद्री क्षेत्रों में जैव विविधता संरक्षित करेंगे तटरक्षक

माई सिटी रिपोर्टर

देहरादून। देश के समुद्र तटीय इलाकों के पारिस्थितिकी के साथ ही जैव विविधता पर मंडरा रहे खतरों से निपटने का लेकर वन अनुसंधान संस्थान समेत देश के तमाम वैज्ञानिक संस्थानों के साथ ही भारतीय तटरक्षक बल के अफसर तैयार किए जा रहे हैं। इसके लिए केंद्रीय वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की ओर से विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में तटरक्षक बल के अफसरों को गुर सिखाए जा रहे हैं।

प्रशिक्षण में गोवा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी जैसे राज्यों के अधिकारी, सैन्यकर्मी हिस्सा ले रहे हैं। वैज्ञानिक सेमिनार का उद्घाटन करते हुए वन अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ. रेनू सिंह ने समुद्र तटीय इलाकों में पारिस्थितिकी तंत्र और प्रबंधन के महत्व पर जानकारी देते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन के साथ ही कई आर्थिक और औद्योगिक गतिविधियों से दुनिया भर के समुद्र तटीय क्षेत्रों में कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। जो समुद्र तटीय इलाकों के पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिक स्थिरता के लिए बड़ा खतरा हैं। प्रशिक्षण की शुरुआत वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग के प्रमुख डॉ. वीपी पंवार के स्वागत भाषण से हुई।

भारत के तटरक्षक अधिकारियों के लिए एफआरआई में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों से आए अधिकारियों के साथ निदेशक डॉ. रेणु सिंह। अमर उजाला

प्रशिक्षण में कई प्रदेशों के अधिकारी ले रहे हैं हिस्सा

कार्यक्रम में समुद्र तटीय राज्यों से जुड़े तटरक्षक बल के अफसरों, सैन्यकर्मियों के साथ सभी विभागाध्यक्ष, आईएफएस अधिकारी, वैज्ञानिक, डीन एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी, रजिस्ट्रार एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी, रजिस्ट्रार एफआरआई, संस्थान के तकनीकी कर्मी शामिल हुए।

कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अभिषेक ने बताया कि प्रशिक्षण एक सप्ताह तक चलेगा, जिसमें कई वैज्ञानिक समुद्र तटीय जैवविविधता और प्रबंधन पर अनुभव साझा करेंगे। अफसरों को जैव विविधता के संरक्षण और प्रबंधन से अवगत कराने के लिए मसूरी वन्यजीव अभयारण्य और हरिद्वार में झिलमिल झील का भी भ्रमण कराया जाएगा।

Rashtriya Sahara
20-9-2022

तटरक्षक बल के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान के वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग द्वारा भारतीय तटरक्षक बल के अधिकारियों के लिए तटीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण व प्रबंधन पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। सप्ताहभर तक चलने वाले प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन सोमवार को संस्थान की निदेशक डा.रेणु सिंह ने किया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य तटीय जैव विविधता और इसके प्रबंधन से संबंधित मुद्दों की समझ विकसित करना है। गोवा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी व दिल्ली के 12 अधिकारी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग ले रहे हैं। संस्थान की निदेशक डा.रेणु ने तटीय पारिस्थितिकी तंत्र और इसके प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला। कहा कि कई आर्थिक और औद्योगिक गतिविधियों के कारण दुनियाभर के तटीय क्षेत्र जबरदस्त दबाव में हैं। यह दबाव तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिक स्थिरता के लिए खतरा हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि, समुद्र के स्तर में वृद्धि, समुद्र की सतह के तापमान में वृद्धि और समुद्र के अम्लीकरण जैसी घटनाएं तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र को भी प्रभावित कर कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से समुद्र के स्तर में वृद्धि तटीय जैव विविधता, समुदायों व कृषि उत्पादन पर महत्वपूर्ण होने का अनुमान है। डा.वीपी पंवार ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

The Hawk
20-9-2022

Training Course On 'Conservation And Management Of Coastal Ecosystems' For Officers Of ICG

Dehradun (The Hawk): Forest Ecology and Climate Change Division, FRI organizing a one-week training course on 'Conservation and Management of Coastal Ecosystems' for officers of Indian Coast Guard. The purpose of this training course is to develop an understanding of the issues related to coastal biodiversity and its management. The training course is being attended by 12 officers of Goa, Gujrat, West Bengal, Andman and Nicobar, Kerala, Tamil Nadu, Pondicherry and New Delhi.

The Director, FRI, Dr. Renu Singh, in her inaugural address, expressed her views on importance of coastal ecosystem and its management. Dr. Singh mentioned that coastal areas around the globe are under tremendous pressure due to several economic and industrial activities. These pressures are threatening to the ecological stability of the coastal ecosystem.

She emphasised that climate change is also affecting coastal and marine ecosystems by increasing the frequency of extreme weather events, raising sea levels, raising sea surface temperatures, and causing ocean acidification. The impact of climate change especially sea level rise on coastal biodiversity, communities and agricultural output is projected to be significant. Therefore, its conservation and management is the need of hour. In the end, wished for a fruitful and successful event.

The training started with a welcome address by Dr. V. P. Panwar, Head, Forest Ecology & Climate Change Division. All Head of Divisions, IFS Officers, Scientists, Dean FRI Deemed to be University, Registrar FRI Deemed to be University, Registrar FRI, Technical Staff of the Institute attended the inaugural session of the course. Session concluded with vote of thanks by Dr. Abhishek K. Verma Course Coordinator of the training programme. The training programme will go on for one week in which eminent resource persons will be sharing their experiences and knowledge on the coastal biodiversity and management. Two Field tour will be arranged to Mussoorie Wildlife Sanctuary in Mussoorie and Jhilmil Jheel in Haridwar to expose the officers to the conservation and management of the biodiversity.